IJRAR.ORG E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भीष्म सहानी द्वारा रचित 'मुआवजे' नाटक का अनुशीलन

डा. कविता चांदगुडे

सह प्राध्यापिका,

किटेल कला महाविध्यालय, धारवाड

मुआवजे भीष्म साहनी द्वारा रचित व्यंग्यात्मक नाटक है। इसमें मौजूदा समाज की विडंबनापूर्ण स्थितियों में सांप्रदायिक वैमनस्य को दर्शाया गया है। सामाजिक, राजनीतिक क्षेत्र में बढ़ती अनीति, भ्रष्टाचार, स्वार्थ प्रवृत्ति आदि का यथार्थ चित्रण इस नाटक में भीष्म साहनी ने प्रस्तुत किया है। आजकल सांप्रदायिक दंगे, आपसी घृणा, हिंसा, लूटपाट और आगजनी के रूप में उभरते रहे हैं। सांप्रदायिक सद्भावना को बनाए रखने का भरसक प्रयास जा रहा है। भाईचारे की दुहाई देते हुए इस वैमनस्य से संत्रस्त जनता के दुख दूर करने का प्रयास के द्वारा किया जा रहा है। संतोष तक जनता की आंसू पोछने का बहाना भी किया जाता है। दरअसल नेताओं और अधिकारियों को जनता के सुख-दुख से लेना देना नहीं है| सिर्फ जनता में अपनी छवि बनाए रखना, आगामी चुनाव को मद्देनजर रखते हुए नुकसान के बदले मुआवजे देने की कोशिश केवल लोगों कीआंखों में धूल झोंकना मात्र होता है।इस वास्तविकता पर मुहावजे नाटक में भीष्म साहनी ने व्यंग किया है। !

नाटक का आरंभ नगर में सांप्रदायिक दंगे के भड़कने के डर से होता है छोटी-छोटी घटनाओं से कमिश्नर को से होता है कि अगले सोमवार तक दंगा हो जाएगा इसीलिए पूर्व तैयारियां कर लेता है। जैसे जख्मियों का इलाज, लाशें से उठाने का काम, बेघर लोगों को राहत देने का काम, मरने वालों को मुआवजे का प्रबंध आदि की व्यवस्था पहले से ही कर लिया जाता है। यानी लेखक यहां स्पष्ट करते हैं कि पुलिस पुलिस शांति स्थापना के लिए योजना न बनाकर अशांति फैलने पर करने वाले कार्यों पर ध्यान दे रही है। दंगे की संभावना को मिटाने की कोशिश में वह लगती ही नहीं, यह हमारी पुलिस व्यवस्था की खोखलेपन को दर्शाताहै।राजनेता भी इस स्थिति का पूरा फायदा उठाना चाहते हैं। मिनिस्टर ने दंगे के आसार को देखकर तीन तीन बयान तैयार करके आवाज में रेकार्ड कर लेते हैं वे इस तरह है बयान नंबर 1. दंगे से पहले नंबर 2. दंगे के दौरान, बयान नंबर 3. दंगों के बाद। इन तीनों बयानों को उनका बनाता है नौकरशाही आम जनता की त्रासदी को कितने सहज भाव से

लेती है इसे लेखक ने बताया है। सीके मरने या जीने से उन्हें कोई मतलब नहीं है। मंत्री महोदय केवल मुआवजे के बारे में ही व्यस्त है, कौन कैसे मरा, क्यों मारा उनकी नजरों में कुछ अर्थ नहीं रखता। जनता की दुखद अवस्था को दूर करने का नाम मात्र का प्रयास भी नहीं किया जाता, बल्कि मरने के बाद दिए जानेवाले मुआवजे का ज़िक्र भी करते हैं। लेखक मानवीयता के अभाव की विडंबना को प्रकट करते हैं। दंगा होने से पहले मंत्री जी का शांति बनाए रखने के का संदेश के बजाय दंगे के कारण दिए जाने वाले मुआवजे का जिक्र रहा बयान मैं पहुंच जाता है। अभी दंगा हुआ नहीं और लोग मरे नहीं पर जनता भी मुआवजे की आशा में लग जाती है।

पुलिस कमिशनर के दफ्तर का टेलीफोन बजने लगता है। लोग पूछने लगते कि मुआवजा कितना मिलेगा। कमिशनर परेशान होकर कहता है कि 'दंगा नहीं हुआ। यह गलतफहमी है तहसील गलत है। दंगे का इंतजार करो।' यहां लेखक ने पुलिस के द्वारा दंगे का इंतजार करो बताकर करारा व्यंग किया है। उनका पी ए आसानी से कहता है कि यह एक छोटी सी गलती है, पहले बयान के बदले दूसरा बयान सुनाया गया है। जनता के साथ नेताओं का बयानबाजी का खेल का भंडाफोड़ लेखक ने किया है। इसके बावजूद लोक कमिशनर र के दफ्तर के बाहर पिछले दंगों में मारे गए लोगों के मुआवजा मांगने के लिए लंबी कतार में खड़े होते हैं जबकि उनके पास सबूत यानी लाश नहीं है।लोग किसी भी कीमत पर मुआवजा पाना चाहते हैं । दुकानदार दंगे के भय से दुकान बंद करने लगते हैं। सुथरा कहता है - 'कपडे की दुकानें खुली रहे कफन के लिए, किरोसीन की दुकान खुली रहे आग लगाने के लिए, लकड़ियों के टाल खुले रहें, अगले जहान पहुंचाने के लिए बाकी सब लोग दुकानें बंद करके टेलीविजन देखो।' सुथरे की बातों से लोगों के मन की बात को लेखक ने खोल के रख दिया है।

पिछले दंगों में दीनू जख्मी हो कर बेरोजगार हो गया था। सूत्रा। सतरा उसे इलाज के लिए रिलीफ कैंप और मुआवजे के बारे में बताता है। मंगल दीनू और तेजा जो बेरोजगार है उन्हें मरने के लिए कहता है उनके घर वालों को मुआवजा मिल जाए। दीनू मरने से पहले एक शर्त रखता है कि पहले वह ब्याह करेगा फिर मरेगा। इसे सुनकर बाप अपनी बेटियों को लेकर आते हैं । दीनू शांति से शादी करता है। शादी के बाद दीनू मरना नहीं चाहता और कहता है कि मैं नहीं मारूंगा , अगले दंगे में मरूंगा ' । मुआवजे के लिए शांति के पिता का लालच देख सकते हैं। दंगा न होने के कारण दीनू शांति के घर में मुफ्त की रोटी तोड़ने लगा तो शांति का बाप परेशान हो जाता है। वह अपनी नाराजगी सुथरा पर जताता है। सुथरा बताता है कि दंगा होकर रहेगा, आज नहीं तो कल होगा, छः महीने बाद होगा, पर होगा जरूर । सुथरा के द्वारा लेखक ने कड़वा सत्य बताया है कि हमारे देश की विडंबना है कि जाति, धर्म की आड़ में दंगे आम बात है।इसी दौरान सरकारी जमीन पर झुग्गी झोपड़ी वालों को हटाने की कोशिश भी की जाती है। जग्गा को जमीन खाली कराने के लिए गुमास्ता दो-चार लोगों की कत्ल करने के लिए भी कहता है। मरने के लिए निकले दिनों पर जग्गा कुल्हाड़ी डी फेकता है पर चूक जाता है। दीनू उसे फिर से मारने के लिए कहता है तो तू जग्गा हैरान होता है। उसे अपने साथ ले जाता है। गोली चलने की आवाज सुनकर दीनू मारा गया समझ कर शादी उसकी लाश को ढूंढती है ताकि उसे ले जाकर मुआवजा हासिल करें। लास्ट न मिलने पर भी कमिशनर के दफ्तर पर पहुंचती है। कमिशनर लास्ट लाने के

लिए कहते हैं । इसी बीच आवाज आती है कि हम मुआवजा देंगे। और लोग उस ओर भागते हैं । जग्गा मुहावजे का रकम चुराकर लोगों में बांट देता है। इस घटना के बाद जग्गा से वह चौधरी जगन्नाथ बन जाता है। असेंबली मेंबर के लिए चुनाव में खड़ा हो जाता है। वह लोगों से भाषण में कहता है कि तुम मुझे वोट दो, मैं तुम्हें ज्यादा मुआवजा दूंगा। अभी पांच लाख निकाले हैं , फिर बीस लाख निकालूंगा।'

निष्कर्ष:

इस तरह भीष्म साहानी ने हमारे देश की राजनीतिक स्थिति का कच्चा चिट्ठा खोल कर रखा है। समस्त देश की अव्यवस्था के पीछे निहित कारणों को उजागर करने का प्रयास किया है। नेता, अधिकारी शाही वर्ग, पुंजिपतियों की स्वार्थी एवं लोलुपता का भद्धा रुप का खुलासा इस नाटक में किया है। जनता की मानसिकता पर भी करारा व्यंग्य किया है। जनता के इस मानसिकता का दुरुपयोग करना राजनीतिज्ञ भलीभांति जानते हैं। ऊपर से नीचे तक हर कोई अपने स्वार्थ में लिपटे हुए हैं तो सुधार किस तरह होगी यह विचारणीय है।

आधार ग्रंथ:

1. भीष्म साहनी- मुआवज़े, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली,1993
2. राजेश्वर सक्सेना, प्रताप ठाकुर- भीष्म साहनी: व्यक्ति और रचना, वाणी प्रकाशन, 1982